मानविकी विद्याशाखा
UTTARAKHAND OPEN UNIVERSITY
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी (नैनीताल)

सत्रीय कार्य
फलित ज्योतिष में डिप्लोमा (DPJ-12)

जमा करने की अन्तिम तिथि – 15 मई 2015

कोर्स शीर्षक - खगोलीय परिचय एवं फलित ज्योतिष हेतु आरम्भिक गणित **कोर्स कोड – PJ - 101**

शैक्षिक सत्र - 2014 – 15 **अधिकतम अंक – 40**

यह सत्रीय कार्य दो खण्डों में विभक्त है। खण्ड 'क' में आठ प्रश्न दिये गये है। उनमें से किन्हीं चार के उत्तर अधिकतम 250 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है। खण्ड 'ख' में 4 प्रश्न दिये गये हैं। जिनमें से किन्हीं 2 प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है।

खण्ड – 'क'

1. सौर मास एवं चान्द्र मास का संक्षिप्त वर्णन कीजिये।
2. वर्ष को परिभाषित करते हुए आधुनिक युग में प्रयोग में आने वाले वर्ष का उल्लेख कीजिये।
3. चन्द्रमा एवं वृहस्पति ग्रह का वर्णन कीजिये।
4. भूमध्य रेखा एवं मध्याह्न रेखा में अन्तर स्पष्ट कीजिये।
5. अयनांश को परिभाषित कीजिये।
6. गण्डमूल नक्षत्रों का संक्षिप्त परिचय दीजिये।
7. ग्रहों के वक्री होने से क्या तात्पर्य है ? स्पष्ट कीजिये।
8. अन्तर्दशा का परिचय देते हुये उसके साधन का सूत्र लिखिये।

खण्ड - 'ख'

1. स्वकल्पित योगिनी दशा साधन कीजिये ।
2. द्रेष्काण एवं नवमांश साधन कीजिये।
3. नवग्रहों का विस्तृत वर्णन कीजिये ।
4. पंचांग किसे कहते है ? स्पष्ट कीजिये।